गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण ३

प्रत्येक शास्त्र में ज्ञानी को बहुत ऊँचा दर्जा दिया गया है। सिद्धयोग में हम ज्ञान की पूजा करते हैं। भगवान स्वयं उसकी प्रशंसा करते हैं जो अपने में ज्ञान को धारण किए हुए है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' में भगवान कृष्ण कहते हैं :

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ॥

हे अर्जुन, चार प्रकार के गुणीजन मुझे भजते हैं :
जो दुःखी हैं, जो धन की अपेक्षा रखते हैं,
जो जिज्ञासु हैं,
और जो ज्ञानी हैं। [७:१६]

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः॥

उनमें वह ज्ञानी सर्वश्रेष्ठ है जो सतत दृढ़ है,
जो केवल परमेश्वर का अनन्य भक्त है।
जो ज्ञान में निमग्न है, उसे मैं अत्यन्त प्रिय हूँ
और वह मुझे प्रिय है। [७:१७]

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्॥

ये सभी जिज्ञासु निश्चित ही उत्तम हैं,
किन्तु जो ज्ञान में निमग्न है
उसे मैं अपनी ही आत्मा मानता हूँ।

जिसका मन दृढ़ है,
वह केवल मुझमें यानी परम लक्ष्य में स्थित है। [७:१८]

क्या तुमने ध्यान **नहीं** दिया कि तुम्हारे दैनिक जीवन में भी जब कोई तुम्हें अच्छा परामर्श देता है या बड़ी गहरी समझ की बात कहता है तो तुम्हारे अन्दर अपार कृतज्ञता और सम्मान का भाव उमड़ने लगता है? तुम चाहे कैसी भी परिस्थिति से गुज़र रहे हो या जीवन कितना ही कठिन क्यों न हो, तुम उस परामर्श को अपनाना चाहते हो और तुम उस व्यक्ति को सचमुच में पसन्द करते हो। जब तुम्हारे साथ ऐसा है तो ज़रा सोचो, भगवान उस व्यक्ति से कितना प्रेम करते होंगे जो अपने अन्दर सद्ज्ञान को धारण किए है और चौबीसों घण्टे उसे इसका बोध रहता है?

अभी हाल ही में एक आदमी ने दर्शन में आकर कहा, "गुरुमाई जी, मैं अँधेरी सुरंग से बाहर आ गया हूँ। अब मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा है।"

मैंने मन ही मन भगवान को इस आदमी की देखभाल करने के लिए धन्यवाद दिया। वह व्यक्ति एक लम्बे समय से कष्ट भोग रहा था। और फिर अगली ही साँस में उसने कहा, "पर मैंने अभी तक नीलबिन्दु के दर्शन नहीं किए हैं।"

मैंने उसकी ओर देखकर कहा, "**तुम्हारे** कष्टों का अन्त हो गया है; यह तो आभार मानने वाली बात है।"

"लेकिन . . . लेकिन मुझे नीलबिन्दु के दर्शन नहीं हुए हैं। इतने वर्षों बाद भी!" फिर उसने कहा, "मैं 'नीलबिन्दु कोर्स' लेने वाला हूँ," और बड़ी अर्थपूर्ण दृष्टि से उसने सीधे मेरी आँखों में देखा, मानो संकेत कर रहा हो कि जब वह वहाँ हो तो अच्छा यही होगा कि नीलबिन्दु भी वहाँ प्रकट हो जाए।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ४ "ज्ञान में दृढ़ता," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. ५०-५१।